International Journal of Arts & Education Research

मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्औतिक परिवर्तन के प्रति व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

Krishan Kumar Sharma*[1]

[1]Research Scholar, Dept. of Education, C.M.J. Unversity, Shilong, Meghalaya, India.

स्टेनेट के अनुसार,

"प्राचीन संसार में व्यवसाय शब्द इतना प्रचलित नहीं था जितना की इसका आधुनिक समाज में प्रयोग किया जाता है। उस समय कानून, चिकित्सा आदि गिने-चुने व्यवसाय थे।"

सीधे-साधे शब्दों में व्यवसाय जीविकोपार्जन का तरीका होता है। यह एक व्यापक शब्द है। इसमें औषि, उद्योग, नौकरी, मछली पालन आदि वे सभी रोजगार सम्मिलित होते हैं जिनसे कोई मानव-समूह अपने जीवन-यापन के लिये आवश्यक साधन और सुविधा अर्जित करता है।

आधुनिक समाज में अनेक वृत्तियों का विकास हो गया है जैसे-चार्टर्ड एकाउन्टेसी, आर्किटेक्ट इंजीनियरी, म्यूजिक, पत्रकारिता, फिल्म एक्टिंग आदि। विद्धानों ने इन वृत्तियों का अध्ययन कर उनमें पाये जाने वाले सामान्य लक्षणों का निर्धारण किया है।

जब जटिलताएँ ही जटिलताएँ इक्कठी होकर किसी अन्य कार्य की प्रक्रिया में बाधाएँ उत्पन्न करती हैं उस कार्य के सम्पूर्ण होने में सन्देह करना व्यर्थ नहीं होगा। यही बात व्यवसायों में प्रवेश के लिये सत्य सिद्ध होती है। मानव-व्यक्तित्व की जटिलता, आधुनिक औद्योगीकरण की जटिलता, शैक्षिक विषयों की जटिलता तथा विभिन्न व्यवसायों की जटिलता ने इक्कठे होकर व्यवसाय-प्रणाली को इतना जटिल बना दिया है कि आज के युग में व्यवसायों की प्रऔति को समझना, व्यवसायों का चयन करना तथा व्यवसायों में प्रवेश करने के लिये विशेषज्ञों की सलाह लेना अनिवार्य हो गया है। बिना परामर्श लिये व्यवसायों का चयन घातक सिद्ध हो सकता है तथा ऐसा हुआ भी है। व्यवसायों की अधिकता तथा तीव्रगति से बदल रही परिस्थितियों को देखते हुए व्यवसाय के अनुरूप व्यक्ति तथा व्यक्ति के अनुरूप व्यवसाय का होना बहुत ही आवश्यक हो चुका है। इतना ही नहीं, व्यवसाय में प्रवेश करने के लिये ही परामर्श पर्याप्त नहीं, बल्कि उसमें प्रवेश करने के पश्चात् उसमें संतोषजनक ढंग से सफलतापूर्वक समायोजन की भी आवश्यकता होती है। अतः व्यावसायिक-निर्देशन की आवश्यकता सीमित दायरे में न होकर विस्तृत है।

अध्ययन का औचित्य

शोधार्थी का व्यक्तिगत रूप से दोनों परिवेशों से सम्बन्धित विद्यालयों के शैक्षिक जीन की जानकारी उपलब्ध है। दोनों प्रकार के क्षेत्रों (मैदानी एवं पहाड़ी) से सम्बन्धित होने के परिणाम स्वरूप यह प्रकाश में आया कि गैर सरकारी माध्यमिक स्तर पर (मैदानी एवं पहाड़ी) इन क्षेत्रों से सम्बन्धित विद्यार्थियों के मूल्यों अभिवृत्तियों

तथा रूचियों आदि में पर्याप्त अन्तर निहित है तथा अध्ययन के लिए इसे महत्वपूर्ण सन्दर्भ के रूप में सुनिश्चित करते हुये इसे ही अध्ययन हेतु चुना गया। अतः अध्ययन समस्या का कथन इस प्रकार कथित है:-

समस्या कथन

"मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्औतिक परिवर्तन के प्रति व्यावसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन।"

उद्देश्य

- मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्औतिक परिवर्तन के प्रति व्यावसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

अध्ययन के उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है।

- मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्औतिक परिवर्तन के प्रति व्यावसायिक रूचियों में सार्थक अन्तर है।

परिसीमाएँ

अध्ययन का स्वरूप साधारणतः अधिक व्यापक होता है। अतः समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए शोध समस्या की सीमांकन करना आवश्यक होता है। वर्तमान अध्ययन की परिसीमाएँ निम्नाकिंत हैं:-

प्रस्तुत अध्ययन हेतु केवल हरियाणा राज्य के मैदानी एवं उत्तराखण्ड के पहाड़ी भौगोलिक क्षेत्र को लिया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन हरियाणा के मैदानी भौगोलिक क्षेत्र के अन्तर्गत करनाल तथा पानीपत जिले तथा पहाड़ी भौगोलिक क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तराखण्ड के देहरादून तथा नैनीताल के सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित हैं।

प्रस्तुत अध्ययन गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के इण्टरमीडिएट कक्षा में अध्ययनरत छात्रों तक ही सीमित है।

शोध प्रक्रिया

अतः इन सब विशेषताओं से युक्त वर्णनात्मक अनुसंधान (सर्वेक्षण विधि) को शोधकर्त्ता ने अपने अध्ययन हेतु चयनित किया है।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

जनसंख्या

जनसंख्या का तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों या वस्तुओं से होता है जिससे शोधकर्त्ता अपने अध्ययन के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है तथा इसकी पहचान करके रखता है। प्रस्तुत अध्ययन में मैदानी तथा पहाड़ी क्षेत्रों से कुल 400 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ के **"व्यवसायिक रूचि प्रपत्र"** का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण

इस परिकल्पना का परीक्षण सर्वेक्षण से प्राप्त समंकों के आधार पर निम्नलिखित रूप में किया गया है।

तालिका

विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचियों में अन्तर की सार्थकता

क्षेत्र	छ	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता स्तर
मैदानी	200	48.54	6.87	सार्थक अन्तर है
पहाड़ी	200	41.36	3.40	

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात है कि मैदानी एवं पहाड़ी क्षेत्रों के छात्रों के 'टी' मान में सार्थक अन्तर है। 0.05 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर परिकल्पना निरस्त होती है। निष्कर्षतः छात्र-छात्राओं के सामाजिक परिवर्तन एवं सांस्औतिक परिवर्तन के प्रति व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं के व्यवसाय चयन के प्रति अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु संकलित आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये-

अतः कहा जा सकता है कि पहाड़ी हो अथवा मैदानी दोनों स्थलों के विद्यार्थी आगे बढ़ने के लिये विभिन्न व्यवसायों की जानकारी रखते हैं एवं उनकी जीविकोपार्जन के लिये भी आकांक्षाएँ समान हैं।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-	कपिल, एच0के0	:	सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
2-	कौल, जी0 एन0	:	स्वतन्त्र भारत में मूल्य और शिक्षा
3-	करलिंगर	:	व्यावहारिक शोध का आधार, सुरजीत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4-	गैरेट, एच0ई0	:	मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी
5-	गुप्ता, एन0एल0	:	मूल्य शिक्षा, औष्णा ब्रदर्स, अजमेर
6-	दत्त, एन0के0	:	मूल्य-उद्देश्यपूर्ण जीवन का आधार, स्टर्लिंग, नई दिल्ली
7-	पाण्डेय, डॉ0 राम सकल	:	शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
8.	चौबे, एस0 पी0 तथा चौबे, अखिलेश	:	शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार (इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ), संस्करण : 2002, मूल्य रूपये 150
9.	फोर्थ एजुकेशनल सर्वे	:	एन0सी0ई0आर0टी0 (1983-88), नई दिल्ली

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.